जैन
नैतिक शिक्षा
JAIN MORAL EDUCATION

प्रवेशिका
(PRE-PRAIMARY)

डॉ. बी.सी. जैन

जैन

नैतिक शिक्षा

(JAIN MORAL EDUCATION)

प्रवेशिका

(PRE-PRIMARY)

लेखक एवं सम्पादक

डॉ. बी. सी. जैन, जयपुर

प्रकाशक

जैन पाठशाला समिति, जयपुर

संस्करण : 1000 प्रतियाँ (15 जुलाई 2016)
कृति : जैन नैतिक शिक्षा (प्रवेशिका)
लेखक एवं सम्पादक : डॉ. बी. सी. जैन

मूल्य : ₹ 10/-

प्रकाशक : **जैन पाठशाला समिति, जयपुर**
केन्द्रीय कार्यालय : 164/267, हल्दी घाटी, मार्ग
प्रताप नगर, जयपुर - 302033
मो. 89555872717, shikhar.shrutsamvardhan@gmail.com

Printed by : Pixel 2 Print, Jaipur (Hemant Jain)
Cell : 9509529502, pixel_2_print@yahoo.com

विषय सूची

	जय बोलो	5
1.	प्रार्थना	6
2.	णमोकार महामंत्र	7
3.	चत्तारिमंगल	10
4.	तीर्थंकर	12
5.	जीव-अजीव	14

आभार

इस कृति में जिन आचार्यों, विद्वानों की रचनाओं का प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से समावेश किया गया है, उनका हृदय से आभार ज्ञापित करते हैं। - सम्पादक

प्रकाशकीय

जैन धर्म विश्व का एक मात्र वैज्ञानिक धर्म है जिसके सिद्धान्त वस्तु स्वरूप का सम्यक् प्रतिपादन करने में समर्थ हैं। जैन धर्म के मूल सिद्धान्तों को सरल, सुबोध, रोचक शैली में समझाने के उद्देश्य से जैन नैतिक शिक्षा भागों की क्रमबद्ध शृंखला प्रकाशित कर रहे हैं। भौतिकवादी युग में भोग-विलासवादी पाश्चात्य संस्कृति ने न केवल जैनों को अपितु सम्पूर्ण भारतीय संस्कृति को अपने प्रभाव में ले लिया है जिसके परिणाम स्वरूप शाकाहारी व्यक्ति अपना शुद्ध भोजन छोड़कर अभक्ष्य भक्षण कर रहे हैं। बच्चे एवं युवा धार्मिक एवं नैतिक संस्कारों से दूर होते जा रहे हैं, कम्प्यूटर एवं मोबाईल ने मानसिक शांति भंग कर दी है, प्रतिस्पर्द्धा की इस अंधी दौड़ में हम अपने अस्तित्व को नष्ट करते जा रहे हैं।

बच्चे हमारा भविष्य हैं अत: उनमें धार्मिक संस्कारों को बीजारोपित करना हमारा कर्तव्य है। शिखर श्रुत संवर्धन समिति ने इस कार्य की महत्ता को समझते हुए शिखर व्याख्यानमाला, धार्मिक शिक्षण शिविर तथा राष्ट्रीय स्तर पर जैन पाठशालाओं का संचालन कर ज्ञान की अलख जगाने का प्रयास किया है।

शिक्षण शिविरों, जैन विद्यालयों एवं जैन पाठशालाओं में अध्ययन कराने के उद्देश्य से जैन नैतिक शिक्षा पाठ्य पुस्तक अपनी पाठ्य सामग्री और रोचक प्रस्तुतिकरण के कारण सभी को प्रभावित करेगी। आधुनिक तकनीक का प्रयोग करते हुए प्रत्येक भाग के पाठों के विषयों को कम्प्यूटर के माध्यम से चलचित्र के रूप में भी प्रस्तुत किया गया है।

समिति के मंत्री तथा जैन पाठशाला के निदेशक, जैन दर्शन एवं भाषा के तलस्पर्शी युवा विद्वान् डॉ. बी.सी. जैन ने अथक प्रयास कर इन पुस्तकों को मूर्तरूप दिया है। श्रीमती प्रज्ञा जैन ने अपना बहुमूल्य समय देकर भागों के निर्माण में योगदान दिया। समिति के संयुक्त मंत्री श्री हेमन्त कुमार जैन ने भागों के प्रकाशनार्थ जो अथक प्रयास किया उसके लिये धन्यवाद देते हैं। आप सभी सुधी पाठकों के सुझाव सादर आमंत्रित हैं।

संजय सेठी
(अध्यक्ष)

डॉ. सनत कुमार जैन
(उपाध्यक्ष)

हमारे दैनिक कर्त्तव्य

- अभिवादन में जय जिनेन्द्र ही बोलें।
- सूर्योदय से पूर्व बिस्तर छोड़ने के बाद तथा सायं सोने से पूर्व एवं खाने से पूर्व नौ बार णमोकार मंत्र अवश्य बोलना चाहिए, इससे मन शुद्धि होती है।
- प्रतिदिन देव-दर्शन (मन्दिर जी) करना चाहिए।
- अभक्ष्य पदार्थ (पिज्जा, बर्गर, पेस्ट्री, केक, कोल्ड ड्रिंग्स, आलू बेफर्स, आईसक्रीम, चॉकलेट, आलू, प्याज आदि) नहीं खाने चाहिए इससे हिंसा से बचते हैं तथा स्वस्थ्य रहते हैं।
- रात्रि में भोजन नहीं करना तथा पानी छान कर पीना चाहिए।
- सभी से शिष्टाचार पूर्वक व्यवहार करना चाहिए।
- हमें हमेशा हित-मित-प्रिय मधुर वचन बोलना चाहिए।
- सभी लोगों का यथायोग्य सम्मान करना चाहिए।
- पाप (हिंसा, झूठ, चोरी, कुशील, परिग्रह) तथा कषाय (क्रोध, मान, माया, लोभ) को त्याग कर जीवन पवित्र बनाना चाहिए।
- हमेशा मन लगाकर पढ़ना चाहिए।
- जिनवाणी को कण्ठस्थ करना चाहिए इससे बुद्धि का विकास होता है।
- वीतरागी देव-शास्त्र-गुरु के अतिरिक्त अन्य किसी कुदेवादि को नमस्कार नहीं करना चाहिए। इससे जैन धर्म में दृढ़ता आती है।
- मैं कौन हूँ? भगवान कौन है? तथा मैं भगवान कैसे बन सकता हूँ, इसका चिंतन प्रतिदिन करना चाहिए।
- भगवान से हमें कोई लौकिक भोग सामग्री प्राप्ति की इच्छा नहीं करनी चाहिए, इससे पाप बन्ध होता है।

जय बोलो (बाल-गीत)

जय बोलो, जय बोलो,
पंच प्रभु की जय बोलो।

केवलज्ञानी, धर्मोपदेशक,
अरहंत प्रभु की जय बोलो।

जय बोलो..

अशरीरी, सिद्धालय में रहने वाले,
सिद्ध प्रभु की जय बोलो।

जय बोलो..

आचारांगों का पालन करने वाले,
आचार्यों की जय बोलो।

जय बोलो..

द्वादशांग का ज्ञान कराने वाले,
उपाध्यायों की जय बोलो।

जय बोलो..

ज्ञान-ध्यान में रहने वाले,
सर्व साधुओं की जय बोलो।

जय बोलो..

सब जीवों को मंगलकारी,
आनन्दकारी, सुखकारी
णमोकार मंत्र की जय बोलो।
जैन धर्म की जय बोलो..

जय बोलो..

प्रार्थना

वीर प्रभु की हम संतान, पढ़ें-लिखे होवे विद्वान्।
मन पढ़ने में सदा लगाते, रोज सबेरे मंदिर आते।
अपना जीवन बने महान्, वीर प्रभु की हम संतान।।
पंच प्रभु हैं ईश हमारे, चरणों में है नमन तुम्हारे।
नित हम करते हैं गुणगान, वीर प्रभु की हम संतान।।
महावीर की वाणी सुनेंगे, आतम अनुभव आज करेंगे।
हम भी बनेंगे भगवान, वीर प्रभु की हम संतान।।

जोर से बोलो ....

- महावीर का क्या संदेश - जियो और जीनो दो।
- ज्ञाता-दृष्टा आत्मा- बन जाओ परमात्मा।
- राग-द्वेष तो कर्म है - वीतरागता धर्म है।
- एक-दो-तीन-चार - जैन धर्म की जय जयकार।
- घर-घर से निकले आवाज - सत्य-अहिंसा-शाकाहार।
- चिदानन्द ध्रुवधाम की - जय हो सिद्ध भगवान की।
- महावीर ने क्या दिया - भगवान आत्मा बता दिया।

पाठ–2

णमोकार महामंत्र

णमो अरहंताणं
णमो सिद्धाणं
णमो आइरियाणं।
णमो उवज्झायाणं
णमो लोए सव्वसाहूणं।।

अरहंतों को नमस्कार
श्री सिद्धों को नमस्कार
आचार्यों को नमस्कार
उपाध्यायों को नमस्कार
जग में जितने साधुगण हैं
उन सब को बन्दूँ बार–बार।
अरहंतों को...

अर्थ – लोक के सब अरहंतों को नमस्कार हो, सिद्धों को नमस्कार हो, आचार्यों को नमस्कार हो, उपाध्यायों को नमस्कार हो और लोक के सर्व साधुओं को नमस्कार हो।

णमोकार मंत्र का महत्व

अरहंत

एसो पंच णमोयारो, सव्व पावप्पणासणो।
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं होई मंगलं।।
यह पंच नमस्कार महा, सब पापों का क्षय कारक।
मंगल में सबसे पहला, प्रथम सुमंगल सुखकारक।।

आचार्य

अर्थ – यह पंच नमस्कार मंत्र सब पापों को नष्ट करने वाला है और सब मंगलों में पहला मंगल है। इसलिये हर शुभ कार्य करने के पहले यह मंत्र जरूर बोलना चाहिए।

साधु

अभ्यास

मौखिक

प्रश्न 1. णमोकार मंत्र में किसको नमस्कार किया गया है?
प्रश्न 2. परमेष्ठी किसे कहते हैं? नाम बताइये।
प्रश्न 3. णमोकार मंत्र पढ़ने से हमें क्या लाभ है?
प्रश्न 4. णमोकार मंत्र सुनाईये?
प्रश्न 5. णमोकार मंत्र का महत्त्व बोलिये?
प्रश्न 6. पापों का नाश कौन करता है?

लिखित

प्रश्न 1. णमोकार मंत्र में ..... परमेष्ठी हैं। (पाँच/तीन)
प्रश्न 2. णमोकार मंत्र ..... भाषा में लिखा है। (संस्कृत/प्राकृत)
प्रश्न 3. णमोकार मंत्र में ..... भगवान हैं। (दो/तीन)
प्रश्न 4. पापों का नाश ..... करता है। (णमोकार मंत्र / सामान्य मंत्र)

हम होंगे ज्ञानवान

हम होंगे ज्ञानवान, हम होंगे ज्ञानवान।
हम होंगे ज्ञानवान, एक दिन.....
हो-हो मन में है विश्वास, पूरा है विश्वास।
हम होंगे ज्ञानवान, एक दिन....
हम बनेंगे वीतराग, हम बनेंगे वीतराग।
हम बनेंगे वीतराग, एकदिन....
हो-हो मन में विश्वास, पूरा है विश्वास।
हम होंगे ज्ञानवान, एक दिन....
हम धरेंगे आतम ध्यान, हम धरेंगे आतम ध्यान।
हम धरेंगे आतम ध्यान, एक दिन....
हो-हो मन में है विश्वास, पूरा है विश्वास।
हम होंगे ज्ञानवान, एक दिन....

पाठ–3

चत्तारिमंगल

चत्तारि मंगलं, अरहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं,
साहू मंगलं, केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं।
चत्तारि लोगुत्तमा, अरहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा,
साहू लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमा।
चत्तारि सरणं पव्वज्जामि, अरहंते सरणं पव्वज्जामि,
सिद्धे सरणं पव्वज्जामि, साहू सरणं पव्वज्जामि,
केवलिपण्णत्तं धम्मं सरणं पव्वज्जामि।

मंगल चार, चार हैं उत्तम, चार शरण में जाऊँ मैं।
मन–वच–काय त्रियोग पूर्वक, शुद्ध भावना भाऊँ मैं।।
श्री अरिहंत देव मंगल हैं, श्री सिद्ध प्रभु हैं मंगल।
श्री साधु मुनि मंगल हैं, है केवली कथित धर्म मंगल।।
श्री अरिहंत लोक में उत्तम, सिद्ध लोक में हैं उत्तम।।
साधु लोक में उत्तम हैं, है केवली कथित धर्म उत्तम।
श्री अरहंत शरण मैं जाऊँ, सिद्ध शरण में मैं जाऊँ।।
साधु शरण में जाऊँ, केवली धर्म कथित धर्म शरण जाऊँ।।

अर्थ : लोक में चार मंगल हैं– अरहंत भगवान मंगल हैं, सिद्ध भगवान मंगल हैं, साधु (आचार्य, उपाध्याय एवं साधु) मंगल हैं तथा केवली भगवान द्वारा बताया गया वीतराग धर्म मंगल है।

लोक में चार उत्तम हैं– अरहंत उत्तम हैं, सिद्ध उत्तम हैं, साधु उत्तम हैं तथा केवली भगवान द्वारा बताया गया वीतराग धर्म उत्तम है।

मैं चारों की शरण में जाता हूँ– अरहंत भगवान की शरण में जाता हूँ, सिद्ध भगवान की शरण में जाता हूँ। साधुओं की शरण में जाता हूँ तथा केवली भगवान द्वारा बताये गये वीतराग धर्म की शरण में जाता हूँ।

मंगल– जो मोह–राग–द्वेष रूपी पापों एवं कषायों को नष्ट कर सच्चा सुख उत्पन्न करे उसे हम मंगल कहते हैं।

उत्तम – लोक में जो सर्वश्रेष्ठ हो उसे उत्तम कहते हैं।

शरण – शरण सहारे को कहते हैं। मैं इन चारों की शरण में जाता हूँ।

आत्मा की शरण – पंच परमेष्ठी द्वारा बताये गये मार्ग पर चलकर अपनी आत्मा की शरण लेना ही पंचपरमेष्ठी की शरण है।

अभ्यास

मौखिक

प्रश्न 1. लोक में कितने मंगल हैं?
प्रश्न 2. लोक में कितने उत्तम हैं?
प्रश्न 3. मंगल किसे कहते हैं?
प्रश्न 4. शरण किसे कहते हैं?
प्रश्न 5. केवली पण्णत्तं का क्या अर्थ है?
प्रश्न 6. हमें किसकी शरण में जाना चाहिए?

लिखित

प्रश्न 1. साहू शब्द का अर्थ ..... है। (सिद्ध/साधु)
प्रश्न 2. पण्णत्तं का अर्थ ..... है। (प्रणीत/प्रणाम)
प्रश्न 3. चत्तारि मंगल पाठ ..... भाषा में लिखा है। (संस्कृत/प्राकृत)
प्रश्न 4. लोक में जो सर्वश्रेष्ठ हो उसे ..... कहते हैं। (उत्तम/शरण)

पाठ–4

तीर्थंकर भगवान

जो धर्म तीर्थ का उपदेश देते हैं, उन्हें तीर्थंकर कहते हैं। तीर्थंकरों के पाँच कल्याणक होते हैं, केवलज्ञान प्राप्त होने के बाद समोशरण की रचना होती है और लोक कल्याण के लिए दिव्यध्वनि (उपदेश) खिरती है। तीर्थंकर चौबीस होते हैं–

चौबीस तीर्थंकरों के नाम

1.	ऋषभनाथ	2.	अजितनाथ
3.	संभवनाथ	4.	अभिनन्दन
5.	सुमतिनाथ	6.	पद्मप्रभ
7.	सुपार्श्वनाथ	8.	चन्द्रप्रभ
9.	पुष्पदन्त	10.	शीतलनाथ
11.	श्रेयांसनाथ	12.	वासुपूज्य
13.	विमलनाथ	14.	अनन्तनाथ
15.	धर्मनाथ	16.	शान्तिनाथ
17.	कुंथुनाथ	18.	अरनाथ
19.	मल्लिनाथ	20.	मुनिसुव्रत
21.	नमिनाथ	22.	नेमिनाथ
23.	पार्श्वनाथ	24.	महावीर

अनेक नाम वाले तीर्थंकर

ऋषभदेव – आदिनाथ

पुष्पदन्त – सुविधिनाथ

महावीर – वीर, अतिवीर, सन्मति और वर्द्धमान

छंद रूप में तीर्थंकरों के नाम

ऋषभ, अजित, संभव, अभिनन्दन,
सुमति, पद्म, सुपार्श्व जिनराय।
चन्द्र, पहुप, शीतल, श्रेयांस जिन,
वासुपूज्य, पूजित सुरराय।।
विमल, अनन्त, धर्म जस उज्ज्वल,
शान्ति, कुंथु, अर, मल्लि मनाय।
मुनिसुव्रत, नमि, नेमि, पार्श्व प्रभु,
वर्द्धमान पद पुष्प चढ़ाय।।

लाभ– तीर्थंकरों द्वारा बताये हुये मार्ग पर चलकर हम भी भगवान बन सकते हैं।

अभ्यास

मौखिक

प्रश्न 1. तीर्थंकर किसे कहते हैं?
प्रश्न 2. तीर्थंकर कितने होते हैं?
प्रश्न 3. चौबीसों तीर्थंकरों के नाम सुनाओ।
प्रश्न 4. एक से अधिक नाम किन-किन तीर्थंकरों के हैं? नाम बताइये।
प्रश्न 5. तीर्थंकर के कितने कल्याणक होते हैं?
प्रश्न 6. पाँच कल्याणकों के नाम बताइए?

लिखित

प्रश्न 1. तीर्थंकर ... होते हैं? (24/26)
प्रश्न 2. ऋषभदेव का दूसरा नाम ..... है। (महावीर/आदिनाथ)
प्रश्न 3. पुष्पदंत .... नम्बर के तीर्थंकर हैं। (9/8)
प्रश्न 4. तीर्थंकर की दिव्यध्वनि ..... में खिरती है। (समोशरण/साधारण सभा)

पाठ–5

जीव-अजीव

(दो बच्चे आपस में बात करते हुए)

सिद्धिका : जय जिनेन्द्र दृष्टि! तुम जीव हो या अजीव?

दृष्टि : जय जिनेन्द्र सिद्धिका! यह जीव, अजीव क्या होता है?

सिद्धिका : जो जानता देखता है, सुख–दुःख का अनुभव करता है, जिसमें ज्ञान होता है, वह जीव कहलाता है; जैसे – मनुष्य, पशु, पक्षी आदि।

दृष्टि : और अजीव क्या है?

सिद्धिका : जो जानता देखता नहीं है, सुख–दुःख का अनुभव नहीं करता जिसमें ज्ञान नहीं होता, वह अजीव कहलाता है; जैसे – टेबिल, कुर्सी आदि।

दृष्टि : अब समझ में आया कि जैसे आँख देखती है तो वह भी जीव हुई।

सिद्धिका : नहीं, हमारा शरीर अजीव है, आत्मा जीव है। आत्मा ही जानने देखने का काम करता है। मरने के बाद आँख और कान रहते हैं पर देखते, सुनते नहीं हैं।

दृष्टि : अब समझ में आया कि हमारा शरीर अजीव है लेकिन आत्मा जीव है; जैसे – हाथी का शरीर अजीव है लेकिन उसकी आत्म जीव है।

सिद्धिका : गाय जीव है या अजीव?

दृष्टि : हमारे शरीर के जैसे ही गाय का शरीर भी अजीव है, परन्तु आत्मा जीव है। जीव अजीव पढ़ने से हमें क्या लाभ है?

सिद्धिका : जीव–अजीव के ज्ञान के बिना आत्मा की पहचान नहीं हो सकती। सच्चे सुख की प्राप्ति नहीं होगी, इसलिए सुखी होने के लिए जीव अजीव का ज्ञान होना आवश्यक है।

अभ्यास

मौखिक

प्रश्न 1. जीव किसे कहते हैं?

प्रश्न 2. अजीव किसे कहते हैं?

प्रश्न 3. हमारा शरीर जीव है अजीव?

प्रश्न 4. आँख देखती है या आत्मा सोच कर बताइये?

प्रश्न 5. जीव-अजीव के ज्ञान से क्या लाभ हैं?

प्रश्न 6. हम सुखी कैसे हो सकते हैं?

लिखित

प्रश्न 1. जो जानता देखता है .... कहते हैं। (जीव/अजीव)

प्रश्न 2. कुत्ते का शरीर ..... है। (जीव/अजीव)

प्रश्न 3. देखने वाला .... है। (आत्मा/शरीर)

प्रश्न 4. जीव-अजीव के ज्ञान से ..... होते हैं। (सुखी/दुःखी)

चेतन राजा

चेतन राजा कहाँ गये थे,
देह में छिपकर सो रहे थे।

नरक में जाकर रो रहे थे,
स्वर्ग में जाकर हँस रहे थे।

मंदिर जी आयेंगे,
आतम ध्यान लगायेंगे।

वीतरागी बन जायेंगे,
सिद्ध-शिला पर जायेंगे।

शिखर श्रुत संवर्धन समिति

164/267, हल्दी घाटी, मार्ग, प्रताप नगर, जयपुर - 302033
मो. 89555872717, shikhar.shrutsamvardhan@gmail.com

गतिविधियाँ

वर्तमान में समिति द्वारा निम्न गतिविधियों का संचालन किया जा रहा है -

- जैन पाठशाला (स्कूल ऑफ जैनिज्म) का सम्पूर्ण देश में संचालन करना।
- प्रतिवर्ष विशिष्ट विद्वानों को आमंत्रित कर शिखर व्याख्यानमाला का आयोजन।
- प्रतिभावान छात्रों को छात्रवृत्ति प्रदान करना।
- धार्मिक सत्साहित्य का प्रकाशन।
- धार्मिक, सामाजिक गतिविधियों का संचालन।
- पाण्डुलिपियों का संरक्षण।
- आचार्यों के मूल ग्रंथों पर शोधकार्य करवाना।
- धार्मिक शिक्षण शिविर आयोजित करना।
- सामाजिक, सांस्कृतिक चेतना के कार्यक्रम।

संजय सेठी
अध्यक्ष
मो. 9314134934

डॉ. बी. सी. जैन
मंत्री
मो. 9414769937

जय जिनेन्द्र

जय जिनेन्द्र जय जिनेन्द्र, जय जिनेन्द्र बोलिए।
जय जिनेन्द्र की ध्वनि से, अपना मौन खोलिए।।

जय जिनेन्द्र ही हमारा, एक माप मंप हो।
जय जिनेन्द्र बोलने को, हर मनुज स्वतंप हो।।
जय जिनेन्द्र बोल-बोल, खुद जिनेन्द्र हो लिए।
जय जिनेन्द्र जय जिनेन्द्र, जय जिनेन्द्र बोलिए।।

हे जिनेन्द्र! तान दो, मोक्ष का वरदान दो।
कर रहे हम प्रार्थना, मम प्रार्थना पर ध्यान दो।।
जय जिनेन्द्र बोल-बोल, हृदय के द्वार खोलिए।
जय जिनेन्द्र जय जिनेन्द्र, जय जिनेन्द्र बोलिए।।

पाप छोड़ धर्म जोड़, है जिनेन्द्र देशना।
अष्ट कर्म को मरोड़, है जिनेन्द्र देशना।।
जाग-जाग-जग चेतन, बहुकाल सो लिए।
जय जिनेन्द्र जय जिनेन्द्र, जय जिनेन्द्र बोलिए।।